प्रेषक,

मिशन निदेशक,
राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन उ0प्र0,
विशाल कॉम्पलैक्स,
19–ए, विधान सभा मार्ग, लखनऊ।

सेवा में,

समस्त मुख्य चिकित्सा अधिकारी,
उत्तर प्रदेश।

पत्र संख्या–एस0पी0एम0यू0/CH/IYCF/18–14/2016–17/3529-75 दिनांक 18/07/2016

विषयः–"विश्व स्तनपान सप्ताह" (Breast Feeding Week) दिनांक 1–7 अगस्त 2016 के मध्य मनाये जाने के सम्बंध में।

महोदय,

आप अवगत है कि प्रत्येक वर्ष अगस्त माह का प्रथम सप्ताह **"विश्व स्तनपान सप्ताह" (Breast Feeding Week)** के रुप में मनाया जाता है। यह भी सर्वविदित है कि शिशु के लिए स्तनपान सर्वोत्तम आहार एवं शिशु का मौलिक अधिकार है। मां का दूध शिशु के शारीरिक तथा मानसिक विकास, शिशु को डायरिया, निमोनिया एवं कुपोषण से बचाने और स्वास्थ के लिए आवश्यक है अतः शिशु को प्रथम छः माह तक केवल मां का दूध ही दिया जाय तत्पश्चात मां के दूध के साथ घर पर बने पूरक पोषक आहार की शुरूआत की जाये। मां का दूध कम–से–कम दो वर्ष तक जारी रखा जाना आवश्यक है। विभिन्न शोधों से यह स्पष्ट हो चुका है कि स्तनपान से न केवल शिशुओं और मांताओं को बल्कि समाज और देश को भी कई प्रकार के लाभ होते है।

वर्ष 2015 में "लैन्सेट" पत्रिका द्वारा जारी की गई एक रिपोर्ट में बताया गया है कि मात्र स्तनपान से 5 वर्ष तक के बच्चों में होने वाली मृत्यु की वैशविक संख्या में 8,20,000 तक की कमी लायी जा सकती है यानि कि 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों में होने वाली 13 प्रतिशत मृत्यु को स्तनपान के व्यवहार अपनाकर बचाया जा सकता है। इन्ही आंकड़ों को यदि हम क्रमशः भारत और उत्तर प्रदेश पर लागू करते हैं तो 1,56,000 और 64,350 बच्चों की मृत्यु को बचाया जा सकता है। (स्रोत–ब्रेस्ट फीड़िग इनीशियेंटिव ऑफ इंडिया)। इसी रिपोर्ट से यह भी ज्ञात होता है कि अधिक समय तक स्तनपान करने वाले बच्चों की बुद्वि उन बच्चों की अपेक्षा 3 पॉइन्ट अधिक होती है जिन्हे मां का दूध थोड़े समय के लिये प्राप्त होता है। स्तनपान माताओं में स्तन कैंसर से होने वाली मृत्यु को भी कम करता है।

छः माह तक मात्र स्तनपान, तथा दो साल तक और उसके बाद भी स्तनपान जारी रखने से शिशु उच्च गुणवत्ता वाली ऊर्जा एवं पोषक तत्व प्राप्त करता है। इससे भूख एवं कुपोषण की रोकथाम में मदद मिल सकती है। कृत्रिम भरण–पोषण की तुलना में स्तनपान प्राकृतिक और सरल (अफोर्डेबल) है।

विश्व के देशों द्वारा सन् 2015 में Sustainable Development Goals (SDGs) को अपनाया गया है। इसके कुल 17 उद्देश्य व 169 लक्ष्य है। यह उद्देश्य तथा लक्ष्य विश्व विकास के मार्ग दर्शक है तथा 2030 तक विश्व में विकास के लक्ष्यों को परिभाषित करते हैं। SDG के 17 से 7 उद्देश्यउ (पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, आठवां, दसवां व तेरहवां) का स्तनपान से सीधा संबंध है। यह उद्देश्य गरीबी, भूख, बेहतर स्वास्थ्य, गुणवत्तापरक शिक्षा, आर्थिक प्रोन्नति, सामाजिक असमानता, तथा पर्यावरण संचरण से संबंधित हैं।

प्रदेश में 1 घन्टे के अन्दर स्तनपान की दर अभी भी मात्र 22.5 प्रतिशत है (रैपिड सर्वे ऑफ चिल्ड्रन 2013–14) जो कि काफी कम है। छः माह तक केवल स्तनपान की दर 62.5 प्रतिशत है जो अन्य प्रदेशों की तुलना में काफी कम है।

अतः इस वर्ष अन्य वर्षों की भांति हम सभी को व्यक्तिगत रूप से इस सप्ताह में अथक प्रयास करने की आवश्यकता है। जनपद के सभी स्वास्थ्य कर्मियों को प्रोत्साहित कर **"विश्व स्तनपान सप्ताह"** को सफल बनाने का प्रयास किये जाने हैं।

प्रत्येक वर्ष की भाँति वर्ष 2015–16 का स्तनपान सप्ताह का थीम निम्नवत है :–

"BREASTFEEDING: A key to Sustainable Development!"

"स्तनपान – स्थायी विकास की कुंजी!"

विश्व में विकास के लिये 17 Sustainable Development Goals (SDGs) निर्धारित किये गये हैं, इस वर्ष का थीम, SDGs को किस प्रकार से प्रोत्साहित एवं समर्थन करता है वह निम्नवत है।

स्तनपान व Sustainable Development Goals (SDGs) के सात उद्देश्यों में सम्बन्ध–

पहला उद्देश्य– गरीबी उन्मूलन–

छः महीने तक केवल स्तनपान जारी रखना न केवल शिशु को ऊर्जा व आवश्यक पोषण प्रदान करता हैं बल्कि परिवार के खर्च को भी कम करता है।

दूसरा उद्देश्य–Zero hunger **में कमी–**

एक धंटे के अन्दर स्तनपान, व छः माह तक केवल स्तनपान व दो वर्ष तक मां का दूध शिशु के विकास हेतु पूरी उर्जा व पोषण प्रदान करता है। केवल स्तनपान कराने से शिशु पोषित व स्वस्थ बना रहता है।

तीसरा उद्देश्य– शिशु व मां का बेहतर स्वास्थ्य–

यदि मां शीघ्र स्तनपान कराये एवं छः माह तक केवल अपना दूध पिलायें तो बाल मृत्युदर में लगभग 13 प्रतिशत की कमी लाई जा सकती है। एक स्वस्थ मां ही स्वस्थ शिशु को जन्म दे सकती है। स्तनपान मां को भी निरोग रखने में सहायक है एवं पी0पी0एच0, स्तन/अंडाशय एवं गर्भाशय के कैंसर तथा अस्थियों के कमज़ोर होने से बचाता है, दो बच्चों के बीच अन्तराल रखने में भी सहायक है, अतः जरूरी है कि मांताओं के स्वास्थ्य पर ध्यान देते हुये उन्हें प्रसव पूर्व जांच के दौरान पोषण, आयरन की गोलियां एवं शीघ्र स्तनपान कराने सम्बन्धी परामर्श दिया जाय।

चौथा उद्देश्य– गुणवत्ता परक शिक्षा–

छः माह तक केवल स्तनपान कराने एवं लम्बे समय तक स्तनपान जारी रखने से बच्चों के मस्तिष्क के विकास और सीखने की क्षमता मे वृद्धि होती है। प्रमाण है कि स्तनपान न करने वाले बच्चों की अपेक्षा स्तनपान करने वाले बच्चे अधिक बुद्धिमान होते हैं, एवं उनकी की शैक्षिक उपलब्धि बेहतर होती है।

आठवां उद्देश्य– सहयोगी कार्यक्षेत्र व आर्थिक सहायता –

स्तनपान कराना हर मां का मौलिक अधिकार है। कामकाजी मां को अपने शिशु को सही प्रकार से स्तनपान कराने की परिस्थितियां बनाने का प्रयास करना चाहिये जैसे क्रेच की सुविधा, छः माह तक तक कार्य से अवकाश प्रदान करने से महिलाओं को प्रोत्साहन मिलेगा।

दसवां उद्देश्य– लैंगिक समानता–

स्तनपान को बढावा देने हेतु आवश्यक है कि समाज में लड़का लड़की में समानता को बढावा दिया जाए एवं लड़कियों को सशक्त किया जाय जिससे कि वह स्तनपान कराने में अपने आप को सक्षम समझे।

तेरहवां उद्देश्य–पर्यावरण स्थिरता –

स्तनपान के स्थान पर बाहरी विभिन्न प्रकार के दूध के पदार्थ केवल शिशुओं के स्वास्थ्य को हानि पहुंचाते हैं बल्कि पर्यावरण को भी दूषित करते हैं। पर्यावरण को बचाने के लिये आवश्यक है कि स्तनपान को बढावा दिया जाय एवं इनफैन्ट मिल्क सब्सटीट्यूट (IMS Act) का प्रतिबद्धता से पालन किया जाय।

इसी रणनीति के अंतर्गत, स्तनपान को विशेष रुप से बढ़ावा देने के लिये "**विश्व स्तनपान सप्ताह" विगत वर्ष की तरह इस वर्ष भी दिनांक 1–7 अगस्त 2016** के मध्य मनाया जा रहा है। स्तनपान कराने वाली धात्री मां को प्रत्येक स्तर से पूर्ण सहयोग प्रदान करके ही हम स्वस्थ शिशु की कल्पना कर सकते हैं। अतः आवश्यक है कि परिवार, समुदाय एवं कार्य स्थल सभी जगह मां को पूरा सहारा दिया जाये तथा उसे 6 माह तक केवल स्तनपान कराने हेतु प्रेरित किया जाय।

समाज में स्तनपान को बढावा देने के लिए विभिन्न सहयोगी विभागों का आपसी सहयोग लिया जाये। जनपद स्तर पर स्वैच्छिक संस्थाओं का सहयोग लेकर स्तनपान को हर स्तर पर बढावा देने के प्रयास किये जाये।

उपर्युक्त के क्रम में आपसे अनुरोध है कि विश्व स्तनपान सप्ताह के मध्य समाज में जागरुकता लाने के लिए निम्न गतिविधियों का आयोजन करने का कष्ट करे।

- जनपद स्तर पर स्वास्थ्य विभाग, आई0सी0डी0एस0, पंचायती राज, शिक्षा, समाज कल्याण, स्वैच्छिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों को आमंत्रित कर एक गोष्ठी का आयोजन कराया जाय।
- समस्त स्वास्थ्य इकाईयों में प्रसवोत्तर कक्ष में स्तनपान को बढावा देन हेतु तैनात चिकित्सकों, स्टाफनर्स, काउन्सलर, न्यूट्रीशनिस्टों द्वारा मां एवं अन्य अभिभावकों को स्तनपान के लाभ, कुपोषण से सुरक्षा तथा स्वस्थ्य एवं बुद्धिमान बच्चों के लिये स्तनपान के महत्व एवं इस वर्ष के थीम को बताया जाय। विशिष्ठ लोगों का भी सहयोग लिया जाय।
- ऊपर के दूध एवं बोतल के प्रयोग से होने वाली हानि तथा इसको रोकने के लिए लाये गये इनफैन्ट मिल्क सब्स्टीट्यूट (IMS Act) के सम्बंध में अधिक से अधिक लोगों को जानकारी दी जाय।
- विगत वर्ष 2015–16 की भाँति विश्व स्तनपान सप्ताह के दौरान आशाओं की बैठक आयोजित की जाय तथा उनके द्वारा प्रत्येक धात्री मां से सम्पर्क कर स्तनपान को बढावा देने के लिये प्रेरित किया जाय। स्वैच्छिक संस्थाओं से सहयोग लेकर प्रचार प्रसार हेतु पैम्फलेट विकसित कर गॉव–गॉव प्रचार–प्रसार किया जाये। दीवालों पर स्लोगन लिखवाये जॉय। सुलभ संदर्भ हेतु निम्न लिखित स्लोगन नीचे दिये जा रहे हैं।

  1– ''मॉ का पहला दूध पिलाओ
  बीमारी को दूर भगाओ''।

  2– ''छः माह तक केवल मॉ का दूध,
  बच्चे को रखें पानी, शहद और घुटटी से दूर''।

  3– ''छः माह तक मॉ का दूध, रखे सभी रोगों से दूर,
  विटामिन ए से है भरपूर, सबसे अच्छा मॉ का दूध''।

  4– ''छः माह के बाद मॉ के दूध के साथ अर्ध ठोस आहार,
  बने चुस्ती, फुर्ती और मजबूती का आधार''।

  5– ''सात माह तक क्या होवे शिशु का आहार,
  मसली रोटी, चावल, दाल, आधा चम्मच घी के साथ''।

- प्राकृतिक आपदा/आपातकाल के समय स्तनपान जारी रख कर नवजात शिशु को बचाया जा सकता है। किसी भी आपदा जैसे कि बाढ आदि के समय स्वयं सेवी संगठन को चिन्हित करते हुये उन्हे इस व्यौवहार का प्रचार–प्रसार करने के लिये तैयार रहने के लिये समुदाय को प्रेषित किया जाये। जो स्थान बाढ़ ग्रस्त हैं वहां विशेषकर आशाओं के माध्यम से नवजात शिशुओं को स्तनपान कराये जाने पर ज़ोर दिया जाता रहे। किसी भी दषा में विगत वर्षों के विश्व स्तनपान सप्ताह के उद्देश्यों को भुलाया न जाये।
- आपको विश्व स्तनपान सप्ताह के दौरान स्तनपान एवं छः माह के उपरान्त ऊपरी आहार को बढावा देने के लिए **एक प्रस्तुतीकरण भेजा जायेगा।** यह प्रस्तुतीकरण इस वर्ष की थीम, व आई 0एम0 एस ऐक्ट के बारे में बतायेगा।
- जनपद की 24 घन्टे प्रसव इकाईयो में स्टाफनर्स, महिलाओं को नवजात को 1 घन्टे के अन्दर स्तनपान एवं 6 माह तक केवल मां का दूध पिलाने के विषय में शिक्षित करें।
- समस्त महिला स्वास्थ्य कार्यकर्त्रियों, आंगनवाडी कार्यकत्रियों एवं आशाओं को प्रोत्साहित करें कि प्रत्येक कर्मी इस सप्ताह के मध्य अधिक से अधिक मांताओं को शिशु जन्म के 1 घन्टे के अन्दर स्तनपान प्रारम्भ करने में मां की सहायता करें तथा धात्री को छः माह तक केवल स्तनपान कराये जाने के महत्व के बारे में बतायें।
- समस्त चिकित्सा अधिकारी आशाओं की बैठक कर आशाओं को इस सम्बन्ध में प्रशिक्षित करें तथा जन–जन तक सन्देश पहुँचाने का कार्य सुनिश्चित करायें।

- समस्त स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी प्रति दिन कम से कम 1–2 ग्राम सभा में आंगनबाड़ी एवं आशाओं के साथ मिल कर गोष्ठी आयोजित कर समुदाय में स्तनपान को बढावा देने के लिये व्यापक प्रचार प्रसार करें।
- आई0सी0डी0एस0 विभाग से समन्वय कर उनके द्वारा आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों में चिकित्सकों द्वारा भाग लिया जाये। प्रभारी चिकित्साधिकारी/अधीक्षकों को निर्देशित करें कि वे ए0एन0एम0 तथा आशाओं को बतायें कि वे ऑगनवाड़ी केन्द्र पर आयोजित बैठक में भाग लेना सुनिश्चित करें।
- स्तनपान सप्ताह के मध्य निम्न बिन्दुओं पर चर्चा की जाय–

1. प्रसवोत्तर कक्ष में नियमित रूप से स्तनपान को बढावा देने पर चर्चा की जाय।
2. समस्त गर्भवती महिलाओं को स्तनपान के लाभ एवं प्रबन्धन की जानकारी प्रदान करने की रणनीति बनाई जाय।
3. धात्री मांताओं को प्रसव के बाद सफल स्तनपान के सम्बन्ध में बताया जाये तथा यदि किसी कारणवश बच्चे को मां से दूर रखना पड़े तो भी स्तनपान बनाये रखने के बारे में बताया जाय।
4. स्तनपान बच्चों को कैसे बुद्धिमान बनाता है इसकी चर्चा की जाये कि मां के पास जितना नवजात रहेगा नवजात में उतनी भावनात्मक वृद्धि होती है, सुरक्षा का आभास रहते है तथा मां के दूध से कुपोषण का शिकार नही हो पाता है बच्चा स्वस्थ्य एवं बुद्धिमान होता है।
5. नवजात शिशु को केवल मां का ही दूध ही दिया जाये, ऊपर से कुछ भी न दिया जाये जब तक कि चिकित्सक द्वारा न बताया गया हो।
6. नवजात शिशु की मांग के अनुसार स्तनपान कराया जाय।
7. बच्चे को चुसनी, निप्पल अथवा सूदर (चबाने के लिये मुलायम खिलौने) आदि न दिये जायें।
8. समुदाय व अन्य प्रभावशाली लोगों को Sustainable Development Goals (SDGs) के बारे में जानकारी देना तथा इसके लक्ष्यों की प्राप्ति में स्तनपान की भूमिका पर सभी से चर्चा करना।
9. स्तनपान व्यवहार के प्रोत्साहन के प्रयास में विभिन्न साझेदारों ,विकासशील संस्थाओं व समुदाय को जोडना
10. विभिन्न स्तर पर स्तनपान संबंधी व्यवहारों संबंधी किये जा रहे कार्यो को गतिशीलता देने हेतु नवीन योजनाये बनाना

- जिन जनपदों में **पोषण पुनर्वास केन्द्र** संचालित हैं, केन्द्र पर तैनात चिकित्सक, न्यूट्रिशनिस्ट, स्टाफनर्स प्रसवोत्तर वार्ड में प्रतिदिन जाकर 1 घंटे के लिये स्तनपान के लाभ तथा कुपोषण से बचाव एवं रोकथाम के लिये छः माह तक केवल मां का दूध तथा छः माह के उपरान्त सुपाच्य एवं पौष्टिक आहार देने की सलाह दें। पोषण पुनर्वास केन्द्र पर मिलने वाली सुविधाओं के विषय में जानकारी दें। **डी0पी0एम0 इस पर अपनी रिपोर्ट तैयार कर मुख्यालय पर भेजें।**
- जिन चिकित्सालयों एवं पोषण पुनर्वास केन्दों पर टी0वी0 लगे है उन स्थानों के लिये " यूनिसेफ तथा एलाइव एण्ड थ्राइव" के माध्यम से पूरक पोषाहार के ऊपर एक विडियो फिल्म (ऊपरी आहार –बच्चे का सर्म्पूण विकास) उपलब्ध कराई जा रही है कृपया उसे दिन में कई बार लाभार्थियों को दिखायें।
- उपर्युक्त के दृष्टिगत निम्न लिखित संचार माध्यम का अधिक से अधिक उपयोग किया जायः–
  - सेहत संदेश वाहिनी
  - आकाशवाणी
  - दूरदर्शन
  - प्रेस कॉन्फ्रैन्स
  - अन्तर्वैयक्तिक संचार (Inter-Personal Communication)
  - गोष्ठी, महिला/बालिकाओं के विद्यालयों में वाद–विवाद प्रतियोगिता, हैल्दी बेबी शो आदि।
- विश्व स्तनपान सप्ताह के मध्य आयोजित कार्यक्रमों की कार्ययोजना आई0सी0डी0एस0 के अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित कर तैयार करें।

वित्त पोषण :–

इस कार्यालय के पत्र संख्या– एस0पी0एम0यू0/एन0एच0एम0/आई0ई0सी0/बाल स्वास्थ्य/2016–17 /46/3387–75, दिनांक 13.07.2016 (छायाप्रति संलग्न) को संदर्भ ग्रहण करने का कष्ट करें। उक्त पत्र के माध्यम से Breast Feeding Week के दौरान जनपदीय एवं ब्लाक स्तरीय बर्कशाप हेतु प्रति जनपद रू0 20000/– एवं जनपद स्तरीय मास मिडिया गतिविधि हेतु रू0 प्रति जनपद रू0 10000/– की दर से धनराशि समस्त जनपदों की जिला स्वास्थ्य समितियों को धनराशि अवमुक्त की जा चुकी है।

अनुश्रवण एवं मूल्यांकनः–

मण्डलीय अपर निदेशक अपने कार्यक्रम के अनुसार जनपदों में आयोजित विशेष बैठकों में भ्रमण कर मार्ग दर्शन दें तथा बैठकों को सफल बनाने में सहयोग प्रदान करें जिला कम्युनिटी प्रोसेस मैनेजर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर आयोजित आशाओं की बैठकों में इस सप्ताह एव माह के दौरान आशाओं को उपरोक्त प्रशिक्षित करें तथा कार्यक्रम में गति लाने के प्रयास करें। सप्ताह के उपरान्त साप्ताहिक रिपोर्ट महानिदेशक, परिवार कल्याण एवं राज्य कार्यक्रम प्रबन्धन इकाई को प्रेषित करें।

संलग्नक–उपरोक्तानुसार

भवदीय,

(आलोक कुमार)
मिशन निदेशक

पत्र संख्या–एस0पी0एम0यू0/CH/IYCF/18–14/2016–17/ दिनांक /07/2016

प्रतिलिपिः निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषितः–

1. प्रमुख सचिव, चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, उत्तर प्रदेश शासन।
2. प्रमुख सचिव महिला एवं बाल विकास, उत्तर प्रदेश शासन।
3. महानिदेशक, राज्य पोषण मिशन, तृतीय तल इन्दिरा भवन, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
4. महानिदेशक, परिवार कल्याण, परिवार कल्याण महानिदेशालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
5. निदेशक, बाल विकास, सेवा एवं पुष्ठाहार, इन्दिरा भवन, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
6. कुलपति, अलीगढ मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ।
7. कुलपति, किंग जार्ज मेडिकल यूनीवर्सिटी लखनऊ।
8. निदेशक, उ0प्र0 ग्रामीण आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान, सैफई, इटावा।
9. समस्त ज़िलाधिकारी,/अध्यक्ष जिला स्वास्थ्य समिति, उत्तर प्रदेश।
10. समस्त मण्डलीय अपर निदेशक, चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, उत्तर प्रदेश ।
11. **प्रधानाचार्य,** एल0एल0आर0 मेडिकल कॉलेज मेरठ/एस0एन0 मेडिकल कॉलेज आगरा/जी0एस0वी0 एम0 मेडिकल कॉलेज कानपुर/एम0एल0बी0 मेडिकल कॉलेज झॉसी/एम0एल0एन0 मेडिकल कॉलेज इलाहाबाद/बी0आर0डी0 मेडिकल कॉलेज गोरखपुर।
12. **विभागाध्यक्ष बालरोग विभाग, नोडल अधिकारी/कोऑर्डिनेटर**–जे0एन0 मेडिकल कॉलेज अलीगढ ए0एम0यू0 अलीगढ/किंगजार्ज मेडिकल यूनीवर्सिटी लखनऊ/एल0एल0आर0 मेडिकल कॉलेज मेरठ /एस0एन0 मेडिकल कॉलेज आगरा/जी0एस0वी0एम0 मेडिकल कॉलेज कानपुर/एम0एल0बी0 मेडिकल कॉलेज झॉसी/एम0एल0एन0 मेडिकल कॉलेज इलाहाबाद/बी0आर0डी0 मेडिकल कॉलेज गोरखपुर एवं उ0प्र0 ग्रामीण आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान, सैफई, इटावा।
13. संयुक्त निदेशक, आर0सी0एच0, परिवार कल्याण महानिदेशालय, उत्तर प्रदेश लखनऊ।
14. समस्त मुख्य चिकित्सा अधीक्षिका, (जिला महिला चिकित्सालय) उत्तर प्रदेश।
15. न्यूट्रीशन स्पेशलिस्ट, यूनीसेफ, बी–3/258, विशाल खन्ड, गोमती नगर, उत्तर प्रदेश लखनऊ।
16. समस्त मण्डलीय एवं जनपदीय कार्यक्रम प्रबंधन इकाई, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, उ0प0 को इस निर्देश के साथ की पत्र प्रति अपने जनपद के उल्लेखित अधिकारियों को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें।

(आलोक कुमार)
मिशन निदेशक

प्रेषक,

मिशन निदेशक,
राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन उ0प्र0,
विशाल कॉम्पलैक्स,
19–ए, विधान सभा मार्ग, लखनऊ।

सेवा में,

समस्त मुख्य चिकित्सा अधिकारी,
उत्तर प्रदेश।

पत्र संख्या–एस0पी0एम0यू0/CH/IYCF/18–14/2016–17/ दिनांक 18/07/2016

विषयः–"विश्व स्तनपान सप्ताह" (Breast Feeding Week) दिनांक 1–7 अगस्त 2016 के मध्य मनाये जाने के सम्बंध में।

महोदय,

आप अवगत है कि प्रत्येक वर्ष अगस्त माह का प्रथम सप्ताह **"विश्व स्तनपान सप्ताह" (Breast Feeding Week)** के रुप में मनाया जाता है। यह भी सर्वविदित है कि शिशु के लिए स्तनपान सर्वोत्तम आहार एवं शिशु का मौलिक अधिकार है। मां का दूध शिशु के शारीरिक तथा मानसिक विकास, शिशु को डायरिया, निमोनिया एवं कुपोषण से बचाने और स्वास्थ के लिए आवश्यक है अतः शिशु को प्रथम छः माह तक केवल मां का दूध ही दिया जाय तत्पश्चात मां के दूध के साथ घर पर बने पूरक पोषक आहार की शुरूआत की जाये। मां का दूध कम–से–कम दो वर्ष तक जारी रखा जाना आवश्यक है। विभिन्न शोधों से यह स्पष्ट हो चुका है कि स्तनपान से न केवल शिशुओं और मांताओं को बल्कि समाज और देश को भी कई प्रकार के लाभ होते है।

वर्ष 2015 में "लैन्सेट" पत्रिका द्वारा जारी की गई एक रिपोर्ट में बताया गया है कि मात्र स्तनपान से 5 वर्ष तक के बच्चों में होने वाली मृत्यु की वैशविक संख्या में 8,20,000 तक की कमी लायी जा सकती है यानि कि 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों में होने वाली 13 प्रतिशत मृत्यु को स्तनपान के व्यवहार अपनाकर बचाया जा सकता है। इन्ही आंकड़ों को यदि हम क्रमशः भारत और उत्तर प्रदेश पर लागू करते हैं तो 1,56,000 और 64,350 बच्चों की मृत्यु को बचाया जा सकता है। (स्रोत–ब्रेस्ट फीड़िग इनीशियेंटिव ऑफ इंडिया)। इसी रिपोर्ट से यह भी ज्ञात होता है कि अधिक समय तक स्तनपान करने वाले बच्चों की बुद्वि उन बच्चों की अपेक्षा 3 पॉइन्ट अधिक होती है जिन्हे मां का दूध थोड़े समय के लिये प्राप्त होता है। स्तनपान माताओं में स्तन कैंसर से होने वाली मृत्यु को भी कम करता है।

छः माह तक मात्र स्तनपान, तथा दो साल तक और उसके बाद भी स्तनपान जारी रखने से शिशु उच्च गुणवत्ता वाली ऊर्जा एवं पोषक तत्व प्राप्त करता है। इससे भूख एवं कुपोषण की रोकथाम में मदद मिल सकती है। कृत्रिम भरण–पोषण की तुलना में स्तनपान प्राकृतिक और सरल (अफोर्डेबल) है।

विश्व के देशों द्वारा सन् 2015 में Sustainable Development Goals (SDGs) को अपनाया गया है। इसके कुल 17 उद्देश्य व 169 लक्ष्य है। यह उद्देश्य तथा लक्ष्य विश्व विकास के मार्ग दर्शक है तथा 2030 तक विश्व में विकास के लक्ष्यों को परिभाषित करते हैं। SDG के 17 से 7 उद्देश्यउ (पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, आठवां, दसवां व तेरहवां) का स्तनपान से सीधा संबंध है। यह उद्देश्य गरीबी, भूख, बेहतर स्वास्थ्य, गुणवत्तापरक शिक्षा, आर्थिक प्रोन्नति, सामाजिक असमानता, तथा पर्यावरण संचरण से संबंधित हैं।

प्रदेश में 1 घन्टे के अन्दर स्तनपान की दर अभी भी मात्र 22.5 प्रतिशत है (रैपिड सर्वे ऑफ चिल्ड्रन 2013–14) जो कि काफी कम है। छः माह तक केवल स्तनपान की दर 62.5 प्रतिशत है जो अन्य प्रदेशों की तुलना में काफी कम है।

अतः इस वर्ष अन्य वर्षों की भांति हम सभी को व्यक्तिगत रूप से इस सप्ताह में अथक प्रयास करने की आवश्यकता है। जनपद के सभी स्वास्थ्य कर्मियों को प्रोत्साहित कर **"विश्व स्तनपान सप्ताह"** को सफल बनाने का प्रयास किये जाने हैं।

प्रत्येक वर्ष की भाँति वर्ष 2015–16 का स्तनपान सप्ताह का थीम निम्नवत है :–

"BREASTFEEDING: A key to Sustainable Development!"

"स्तनपान – स्थायी विकास की कुंजी!"

विश्व में विकास के लिये 17 Sustainable Development Goals (SDGs) निर्धारित किये गये हैं, इस वर्ष का थीम, SDGs को किस प्रकार से प्रोत्साहित एवं समर्थन करता है वह निम्नवत है।

स्तनपान व Sustainable Development Goals (SDGs) के सात उद्देश्यों में सम्बन्ध–

पहला उद्देश्य– गरीबी उन्मूलन–

छः महीने तक केवल स्तनपान जारी रखना न केवल शिशु को ऊर्जा व आवश्यक पोषण प्रदान करता हैं बल्कि परिवार के खर्च को भी कम करता है।

दूसरा उद्देश्य–Zero hunger में कमी–

एक धंटे के अन्दर स्तनपान, व छः माह तक केवल स्तनपान व दो वर्ष तक मां का दूध शिशु के विकास हेतु पूरी उर्जा व पोषण प्रदान करता है। केवल स्तनपान कराने से शिशु पोषित व स्वस्थ बना रहता है।

तीसरा उद्देश्य– शिशु व मां का बेहतर स्वास्थ्य–

यदि मां शीघ्र स्तनपान कराये एवं छः माह तक केवल अपना दूघ पिलायें तो बाल मृत्युदर में लगभग 13 प्रतिशत की कमी लाई जा सकती है। एक स्वस्थ मां ही स्वस्थ शिशु को जन्म दे सकती है। स्तनपान मां को भी निरोग रखने में सहायक है एवं पी0पी0एच0, स्तन/अंडाशय एवं गर्भाशय के कैंसर तथा अस्थियों के कमज़ोर होने से बचाता है, दो बच्चों के बीच अन्तराल रखने में भी सहायक है, अतः जरूरी है कि मांताओं के स्वास्थ्य पर ध्यान देते हुये उन्हें प्रसव पूर्व जांच के दौरान पोषण, आयरन की गोलियां एवं शीघ्र स्तनपान कराने सम्बन्धी परामर्श दिया जाय।

चौथा उद्देश्य– गुणवत्ता परक शिक्षा–

छः माह तक केवल स्तनपान कराने एवं लम्बे समय तक स्तनपान जारी रखने से बच्चों के मस्तिष्क के विकास और सीखने की क्षमता मे वृद्धि होती है। प्रमाण है कि स्तनपान न करने वाले बच्चों की अपेक्षा स्तनपान करने वाले बच्चे अधिक बुद्धिमान होते हैं, एवं उनकी की शैक्षिक उपलब्धि बेहतर होती है।

आठवां उद्देश्य– सहयोगी कार्यक्षेत्र व आर्थिक सहायता –

स्तनपान कराना हर मां का मौलिक अधिकार है। कामकाजी मां को अपने शिशु को सही प्रकार से स्तनपान कराने की परिस्थितियां बनाने का प्रयास करना चाहिये जैसे क्रेच की सुविधा, छः माह तक तक कार्य से अवकाश प्रदान करने से महिलाओं को प्रोत्साहन मिलेगा।

दसवां उद्देश्य– लैंगिक समानता–

स्तनपान को बढावा देने हेतु आवश्यक है कि समाज में लड़का लड़की में समानता को बढावा दिया जाए एवं लड़कियों को सशक्त किया जाय जिससे कि वह स्तनपान कराने में अपने आप को सक्षम समझे।

तेरहवां उद्देश्य–पर्यावरण स्थिरता –

स्तनपान के स्थान पर बाहरी विभिन्न प्रकार के दूध के पदार्थ केवल शिशुओं के स्वास्थ्य को हानि पहुंचाते हैं बल्कि पर्यावरण को भी दूषित करते हैं। पर्यावरण को बचाने के लिये आवश्यक है कि स्तनपान को बढावा दिया जाय एवं इनफैन्ट मिल्क सब्सटीट्यूट (IMS Act) का प्रतिबद्वता से पालन किया जाय।

इसी रणनीति के अंतर्गत, स्तनपान को विशेष रुप से बढ़ावा देने के लिये **"विश्व स्तनपान सप्ताह" विगत वर्ष की तरह इस वर्ष भी दिनांक 1–7 अगस्त 2016** के मध्य मनाया जा रहा है। स्तनपान कराने वाली धात्री मां को प्रत्येक स्तर से पूर्ण सहयोग प्रदान करके ही हम स्वस्थ शिशु की कल्पना कर सकते हैं। अतः आवश्यक है कि परिवार, समुदाय एवं कार्य स्थल सभी जगह मां को पूरा सहारा दिया जाये तथा उसे 6 माह तक केवल स्तनपान कराने हेतु प्रेरित किया जाय।

समाज में स्तनपान को बढावा देने के लिए विभिन्न सहयोगी विभागों का आपसी सहयोग लिया जाये। जनपद स्तर पर स्वैच्छिक संस्थाओं का सहयोग लेकर स्तनपान को हर स्तर पर बढावा देने के प्रयास किये जाये।

उपर्युक्त के क्रम में आपसे अनुरोध है कि विश्व स्तनपान सप्ताह के मध्य समाज में जागरुकता लाने के लिए निम्न गतिविधियों का आयोजन करने का कष्ट करे।

- जनपद स्तर पर स्वास्थ्य विभाग, आई0सी0डी0एस0, पंचायती राज, शिक्षा, समाज कल्याण, स्वैच्छिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों को आमंत्रित कर एक गोष्ठी का आयोजन कराया जाय।
- समस्त स्वास्थ्य इकाईयों में प्रसवोत्तर कक्ष में स्तनपान को बढावा देन हेतु तैनात चिकित्सकों, स्टाफनर्स, काउन्सलर, न्यूट्रीशनिस्टों द्वारा मां एवं अन्य अभिभावकों को स्तनपान के लाभ, कुपोषण से सुरक्षा तथा स्वस्थ्य एवं बुद्धिमान बच्चों के लिये स्तनपान के महत्व एवं इस वर्ष के थीम को बताया जाय। विशिष्ठ लोगों का भी सहयोग लिया जाय।
- ऊपर के दूध एवं बोतल के प्रयोग से होने वाली हानि तथा इसको रोकने के लिए लाये गये इनफैन्ट मिल्क सब्स्टीट्यूट (IMS Act) के सम्बंध में अधिक से अधिक लोगों को जानकारी दी जाय।
- विगत वर्ष 2015–16 की भाँति विश्व स्तनपान सप्ताह के दौरान आशाओं की बैठक आयोजित की जाय तथा उनके द्वारा प्रत्येक धात्री मां से सम्पर्क कर स्तनपान को बढावा देने के लिये प्रेरित किया जाय। स्वैच्छिक संस्थाओं से सहयोग लेकर प्रचार प्रसार हेतु पैम्फलेट विकसित कर गॉव–गॉव प्रचार–प्रसार किया जाये। दीवालों पर स्लोगन लिखवाये जॉय। सुलभ संदर्भ हेतु निम्न लिखित स्लोगन नीचे दिये जा रहे हैं।

  1– ''मॉ का पहला दूध पिलाओ
  बीमारी को दूर भगाओ''।

  2– ''छः माह तक केवल मॉ का दूध,
  बच्चे को रखें पानी, शहद और घुटटी से दूर''।

  3– ''छः माह तक मॉ का दूध, रखे सभी रोगों से दूर,
  विटामिन ए से है भरपूर, सबसे अच्छा मॉ का दूध''।

  4– ''छः माह के बाद मॉ के दूध के साथ अर्ध ठोस आहार,
  बने चुस्ती, फुर्ती और मजबूती का आधार''।

  5– ''सात माह तक क्या होवे शिशु का आहार,
  मसली रोटी, चावल, दाल, आधा चम्मच घी के साथ''।

- प्राकृतिक आपदा/आपातकाल के समय स्तनपान जारी रख कर नवजात शिशु को बचाया जा सकता है। किसी भी आपदा जैसे कि बाढ आदि के समय स्वयं सेवी संगठन को चिन्हित करते हुये उन्हे इस व्यौवहार का प्रचार–प्रसार करने के लिये तैयार रहने के लिये समुदाय को प्रेषित किया जाये। जो स्थान बाढ़ ग्रस्त हैं वहां विशेषकर आशाओं के माध्यम से नवजात शिशुओं को स्तनपान कराये जाने पर ज़ोर दिया जाता रहे। किसी भी दषा में विगत वर्षों के विश्व स्तनपान सप्ताह के उद्देश्यों को भुलाया न जाये।
- आपको विश्व स्तनपान सप्ताह के दौरान स्तनपान एवं छः माह के उपरान्त ऊपरी आहार को बढावा देने के लिए **<u>एक प्रस्तुतीकरण भेजा जायेगा।</u>** यह प्रस्तुतीकरण इस वर्ष की थीम, व आई 0एम0 एस ऐक्ट के बारे में बतायेगा।
- जनपद की 24 घन्टे प्रसव इकाईयो में स्टाफनर्स, महिलाओं को नवजात को 1 घन्टे के अन्दर स्तनपान एवं 6 माह तक केवल मां का दूध पिलाने के विषय में शिक्षित करें।
- समस्त महिला स्वास्थ्य कार्यकर्त्रियों, आंगनवाडी कार्यकत्रियों एवं आशाओं को प्रोत्साहित करें कि प्रत्येक कर्मी इस सप्ताह के मध्य अधिक से अधिक मांताओं को शिशु जन्म के 1 घन्टे के अन्दर स्तनपान प्रारम्भ करने में मां की सहायता करें तथा धात्री को छः माह तक केवल स्तनपान कराये जाने के महत्व के बारे में बतायें।
- समस्त चिकित्सा अधिकारी आशाओं की बैठक कर आशाओं को इस सम्बन्ध में प्रशिक्षित करें तथा जन–जन तक सन्देश पहुॅचाने का कार्य सुनिश्चित करायें।

- समस्त स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी प्रति दिन कम से कम 1–2 ग्राम सभा में आंगनबाड़ी एवं आशाओं के साथ मिल कर गोष्ठी आयोजित कर समुदाय में स्तनपान को बढावा देने के लिये व्यापक प्रचार प्रसार करें।
- आई0सी0डी0एस0 विभाग से समन्वय कर उनके द्वारा आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों में चिकित्सकों द्वारा भाग लिया जाये। प्रभारी चिकित्साधिकारी/अधीक्षकों को निर्देशित करें कि वे ए0एन0एम0 तथा आशाओं को बतायें कि वे ऑगनवाड़ी केन्द्र पर आयोजित बैठक में भाग लेना सुनिश्चित करें।
- स्तनपान सप्ताह के मध्य निम्न बिन्दुओं पर चर्चा की जाय–

1. प्रसवोत्तर कक्ष में नियमित रूप से स्तनपान को बढावा देने पर चर्चा की जाय।
2. समस्त गर्भवती महिलाओं को स्तनपान के लाभ एवं प्रबन्धन की जानकारी प्रदान करने की रणनीति बनाई जाय।
3. धात्री मांताओं को प्रसव के बाद सफल स्तनपान के सम्बन्ध में बताया जाये तथा यदि किसी कारणवश बच्चे को मां से दूर रखना पड़े तो भी स्तनपान बनाये रखने के बारे में बताया जाय।
4. स्तनपान बच्चों को कैसे बुद्धिमान बनाता है इसकी चर्चा की जाये कि मां के पास जितना नवजात रहेगा नवजात में उतनी भावनात्मक वृद्धि होती है, सुरक्षा का आभास रहते है तथा मां के दूध से कुपोषण का शिकार नही हो पाता है बच्चा स्वस्थ्य एवं बुद्धिमान होता है।
5. नवजात शिशु को केवल मां का ही दूध ही दिया जाये, ऊपर से कुछ भी न दिया जाये जब तक कि चिकित्सक द्वारा न बताया गया हो।
6. नवजात शिशु की मांग के अनुसार स्तनपान कराया जाय।
7. बच्चे को चुसनी, निप्पल अथवा सूदर (चबाने के लिये मुलायम खिलौने) आदि न दिये जायें।
8. समुदाय व अन्य प्रभावशाली लोगों को Sustainable Development Goals (SDGs) के बारे में जानकारी देना तथा इसके लक्ष्यों की प्राप्ति में स्तनपान की भूमिका पर सभी से चर्चा करना।
9. स्तनपान व्यवहार के प्रोत्साहन के प्रयास में विभिन्न साझेदारों ,विकासशील संस्थाओं व समुदाय को जोडना
10. विभिन्न स्तर पर स्तनपान संबंधी व्यवहारों संबंधी किये जा रहे कार्यो को गतिशीलता देने हेतु नवीन योजनाये बनाना

- जिन जनपदों में **पोषण पुनर्वास केन्द्र** संचालित हैं, केन्द्र पर तैनात चिकित्सक, न्यूट्रिशनिस्ट, स्टाफनर्स प्रसवोत्तर वार्ड में प्रतिदिन जाकर 1 घंटे के लिये स्तनपान के लाभ तथा कुपोषण से बचाव एवं रोकथाम के लिये छः माह तक केवल मां का दूध तथा छः माह के उपरान्त सुपाच्य एवं पौष्टिक आहार देने की सलाह दें। पोषण पुनर्वास केन्द्र पर मिलने वाली सुविधाओं के विषय में जानकारी दें। **डी0पी0एम0 इस पर अपनी रिपोर्ट तैयार कर मुख्यालय पर भेजें।**
- जिन चिकित्सालयों एवं पोषण पुनर्वास केन्दों पर टी0वी0 लगे है उन स्थानों के लिये " यूनिसेफ तथा एलाइव एण्ड थ्राइव" के माध्यम से पूरक पोषाहार के ऊपर एक विडियो फिल्म (ऊपरी आहार –बच्चे का सर्म्पूण विकास) उपलब्ध कराई जा रही है कृपया उसे दिन में कई बार लाभार्थियों को दिखायें।
- उपर्युक्त के दृष्टिगत निम्न लिखित संचार माध्यम का अधिक से अधिक उपयोग किया जायः–
  - सेहत संदेश वाहिनी
  - आकाशवाणी
  - दूरदर्शन
  - प्रेस कॉन्फ्रैन्स
  - अन्तर्वैयक्तिक संचार (Inter-Personal Communication)
  - गोष्ठी, महिला/बालिकाओं के विद्यालयों में वाद–विवाद प्रतियोगिता, हैल्दी बेबी शो आदि।
- विश्व स्तनपान सप्ताह के मध्य आयोजित कार्यक्रमों की कार्ययोजना आई0सी0डी0एस0 के अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित कर तैयार करें।

वित्त पोषण :–

इस कार्यालय के पत्र संख्या– एस0पी0एम0यू0/एन0एच0एम0/आई0ई0सी0/बाल स्वास्थ्य/2016–17 /46/3387–75, दिनांक 13.07.2016 (छायाप्रति संलग्न) को संदर्भ ग्रहण करने का कष्ट करें। उक्त पत्र के माध्यम से Breast Feeding Week के दौरान जनपदीय एवं ब्लाक स्तरीय बर्कशाप हेतु प्रति जनपद रू0 20000/– एवं जनपद स्तरीय मास मिडिया गतिविधि हेतु रू0 प्रति जनपद रू0 10000/– की दर से धनराशि समस्त जनपदों की जिला स्वास्थ्य समितियों को धनराशि अवमुक्त की जा चुकी है।

अनुश्रवण एवं मूल्यांकनः–

मण्डलीय अपर निदेशक अपने कार्यक्रम के अनुसार जनपदों में आयोजित विशेष बैठकों में भ्रमण कर मार्ग दर्शन दें तथा बैठकों को सफल बनाने में सहयोग प्रदान करें जिला कम्युनिटी प्रोसेस मैनेजर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर आयोजित आशाओं की बैठकों में इस सप्ताह एव माह के दौरान आशाओं को उपरोक्त प्रशिक्षित करें तथा कार्यक्रम में गति लाने के प्रयास करें। सप्ताह के उपरान्त साप्ताहिक रिपोर्ट महानिदेशक, परिवार कल्याण एवं राज्य कार्यक्रम प्रबन्धन इकाई को प्रेषित करें।

संलग्नक–उपरोक्तानुसार

भवदीय,

(आलोक कुमार)
मिशन निदेशक

पत्र संख्या–एस0पी0एम0यू0/CH/IYCF/18–14/2016–17/3529-75-16 दिनांक /07/2016

प्रतिलिपिः निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषितः–

1. प्रमुख सचिव, चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, उत्तर प्रदेश शासन।
2. प्रमुख सचिव महिला एवं बाल विकास, उत्तर प्रदेश शासन।
3. महानिदेशक, राज्य पोषण मिशन, तृतीय तल इन्दिरा भवन, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
4. महानिदेशक, परिवार कल्याण, परिवार कल्याण महानिदेशालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
5. निदेशक, बाल विकास, सेवा एवं पुष्ठाहार, इन्दिरा भवन, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
6. कुलपति, अलीगढ मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ।
7. कुलपति, किंग जार्ज मेडिकल यूनीवर्सिटी लखनऊ।
8. निदेशक, उ0प्र0 ग्रामीण आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान, सैफई, इटावा।
9. समस्त ज़िलाधिकारी,/अध्यक्ष जिला स्वास्थ्य समिति, उत्तर प्रदेश।
10. समस्त मण्डलीय अपर निदेशक, चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, उत्तर प्रदेश ।
11. **प्रधानाचार्य,** एल0एल0आर0 मेडिकल कॉलेज मेरठ/एस0एन0 मेडिकल कॉलेज आगरा/जी0एस0वी0 एम0 मेडिकल कॉलेज कानपुर/एम0एल0बी0 मेडिकल कॉलेज झॉसी/एम0एल0एन0 मेडिकल कॉलेज इलाहाबाद/बी0आर0डी0 मेडिकल कॉलेज गोरखपुर।
12. **विभागाध्यक्ष बालरोग विभाग, नोडल अधिकारी/कोऑर्डिनेटर**–जे0एन0 मेडिकल कॉलेज अलीगढ ए0एम0यू0 अलीगढ/किंगजार्ज मेडिकल यूनीवर्सिटी लखनऊ/एल0एल0आर0 मेडिकल कॉलेज मेरठ /एस0एन0 मेडिकल कॉलेज आगरा/जी0एस0वी0एम0 मेडिकल कॉलेज कानपुर/एम0एल0बी0 मेडिकल कॉलेज झॉसी/एम0एल0एन0 मेडिकल कॉलेज इलाहाबाद/बी0आर0डी0 मेडिकल कॉलेज गोरखपुर एवं उ0प्र0 ग्रामीण आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान, सैफई, इटावा।
13. संयुक्त निदेशक, आर0सी0एच0, परिवार कल्याण महानिदेशालय, उत्तर प्रदेश लखनऊ।
14. समस्त मुख्य चिकित्सा अधीक्षिका, (जिला महिला चिकित्सालय) उत्तर प्रदेश।
15. न्यूट्रीशन स्पेशलिस्ट, यूनीसेफ, बी–3/258, विशाल खन्ड, गोमती नगर, उत्तर प्रदेश लखनऊ।
16. समस्त मण्डलीय एवं जनपदीय कार्यक्रम प्रबंधन इकाई, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, उ0प0 को इस निर्देश के साथ की पत्र प्रति अपने जनपद के उल्लेखित अधिकारियों को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें।

(आलोक कुमार)
मिशन निदेशक